इतिहासकार : अबुल फजल

डॉ0 मनोज कुमार

इतिहास अतीत का आईना होता है। गालब्रेथ के शब्दों में ''इतिहास अतीत का वह अंश है जिसे हम जान पायें हैं या जान पाते हैं। वस्तुतः इतिहास समष्टि की अपने अतीत की स्मृति है। पर जब कोई व्यक्ति इस स्मृति का वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर संयोजन करता है, उसे लिपिबिद्ध करता है या यूँ कहें कि अतीत की पुनर्रचना करता है, तो इतिहास का जन्म होता है। विज्ञान के बढ़ते प्रभाव के कारण इतिहास लेखन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का एक प्रवाह आया और प्रो0 जे0 जे0 बरी ने यह घोषित किया कि इतिहास एक विज्ञान है न उससे कम न ज्यादा। इस प्रयास में जब सीमा का अतिक्रमण होने लगा तो प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। वीयर्ड ने वैज्ञानिक इतिहास पर करारी चोट की और राबिन्सन ने कहा कि अब तक वर्त्तमान अतीत का शिकार होता रहा है, अब समय आ गया है कि उसे उलटकर अतीत का वर्त्तमान के लिए उपयोग हो। इन दो अतिवादी दृष्टियों में प्रमुख अंतर यह है कि एक का केन्द्र अतीत में स्थिर होता है जबकि दूसरे का वर्त्तमान में। वस्तुतः तथ्यों से विहीन इतिहासकार आधारहीन होता है तथा इतिहासकार के बिना तथ्य मृत व अर्थहीन।